बेंतः एक बहुउपयोगी फर्नीचर की लकड़ी

बेंत के फर्नीचरों या हैण्डिक्राफ्ट का उपयोग आपने अवश्य किया होगा। आइए हम बहुउपयोगी बेंत के बारे में कुछ जानें।

बेंत पामेसी (एरिकेसी) कुल का पौधा है जो सधारणतया किसी पेड़ के तने के सहारे ऊपर उठता है। इसकी लम्बाई कुछ मीटर से लेकर 70–75 मीटर हो सकती है। रतन बेंत कैलेमस रोटांग (Calamus rotang) की लम्बाई सबसे अधिक लगभग 500 फीट (150 मीटर) तक पायी गयी है। यह उपोष्ण अथवा उष्ण कटिबंधीय जलवायु का पौधा हैं। यह सधारणतया पेड़ों के सहारे झुरमुटों के रूप में उगता है। परन्तु यह अकेले भी उग सकता है। जो कुछ मीटर जाने के बाद पुनः ढह जाता है।परन्तु बढ़वार जारी रहती है । यह दलदली या जल जमाव वाले जगहों पर भी उग सकता है। इसमें सूखा सहने की भी क्षमता होती है। पानी की उपलब्धता में इसकी वृद्धि दर काफी तेज होती है। बेंत के अधिकतर प्रजातियों की ताप सहनशीलता 0^{0}C से भी नीचे तक हो सकती है। बेंत की बढ़वार बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी होती है।

बेंत काफी मजबूत तथा टिकाऊ फर्नीचर की लकड़ी देता है। इसके अतिरिक्त बेंत को छीलना तथा पालिश करना काफी सरल है। काफी कम समय में तथा कम श्रम में काफी अधिक मात्रा में बेंत के फर्नीचर तैयार किये जा सकते हैं। इस दृष्टि से बेंत एक अत्यन्त उपयोगी एवं बहुमूल्य पौधा है।

आवश्यकता इस बात की है कि बेंत कें भारी मांग को देखते हुए बेंत की खेती की जाये। मौसमी जल जमाव वाले बेकार बंजर खेतों, बेहाया (Ipomoea carnea), पटेर (Typha angustifolia), राणा या कॉस (Saccharam sponteneum) प्रभावित मौसमी जल जमाव के क्षेत्रों, नागर मोथा (Cyperus difformis) प्रभावित समतल बंजर खेतों या मौसमी जल जमाव वाले खेतों इत्यादि में पौध रोपण करके 5–6 वर्षों में घनी बेंत तैयार की जा सकती है। बेंत को कम उपजाऊ उथले अगहनी धान के खेतों में भी उगाया जा सकता है। नदियों के डूब क्षेत्र जहाँ अक्सर धान के खेत बाढ़ से डूब जाते हैं, उनमें बेंत की खेती करके अधिक आर्थिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। बेंत का झुरमुट एक बार तैयार हो जाने के बाद यह निरंतर बेंत का उत्पादन करते रहते हैं। प्रत्येक 7–8 वर्षों में कटाई करके प्रति एकड़ खेत से मोटे तनों वाले बेंत (जैसे कैलेमस लैटिफोलियस, कैलेमस एकैन्थोस पैथस, कैलेमस टेनुइस, कैलेमस रेडिकलिस ,कैलेमस रोटांग, कैलेमस इरेक्टस इत्यादि) से लगभग 15 लाख रूपये की एक मुस्त आय हो सकती है। इस प्रकार किसानों के लिए बेंत हरा सोना सिद्ध हो सकता है।

खेत के किसी कोने पर अर्जुन (Terminalia arjuna), शीशम (Dalbergia sisoo), महोगनी (Swetenia mahogani), सेमल (Cieba bombax, Pantendra Cieba), जैटोब (Hymenea caurbaril) इत्यादि के पेड़ लगाकर इन पेड़ों के सहारे निजी जरूरत के लिए बेंत का उत्पादन किया जा सकता है। सड़क ,नहर एवं रेलवे के किनारे पेड़ों के सहारे भी जहाँ पर्याप्त धूप पहूँचती है, बेंत के झुरमुट लगाकर सघन पैकिंग की जा सकती है। बेंत की एक प्रजाति कैलेमस इरेक्टस को खडा रहने के लिए सहारे की जरूरत नहीं होती है। इसकी उॅचाई लगभग 25 फीट होती है।

बेंत जल जमाव में भी उग सकता है

अर्जुन के पेड़ के सहारे खड़े बेत

बेंत जल जमाव में भी उग सकता है

बेंत का वर्गीकरण :–

	Scientific classification	
जगत	Kingdom:	वनस्पति Plantae
संघ	(Phyllum):	Angiosperms
वर्ग	(Class):	Monocots
उपवर्ग	(Sub Class):	Commelinids
	Order:	Arecales
कुल	Family:	एरिकेसी Arecaceae
उपकुल	Subfamily:	Calamoideae
	Tribe:	Calameae
गण	Genus:	कैलेमस *Calamus*
प्रजाति	Species:	***C. rotang***
	Binomial name	
	Calamus rotang	

बेंत की प्रजातियाँ :– बेंत की लगभग हजारों प्रजातियाँ पायी जाती हैं। जिसमें प्रमुख प्रजातियाँ निम्न लिखित है।

Calamus radicalis-Bare-cane ,Calamus rotang,Calamus latifolius, Calamus adspersus, Calamus caryotoides,Calamus compsostachys,Calamus egregius,Calamus gibbsianus,Calamus hollrungii ,Calamus moti ,Calamus muelleri ,Calamus obovoideus, ,Calamus suaveolens , Calamus tenuis,Calamus warburgii , Calamus zeylanicus,Calamus acanthospathus.

बेंत की कुछ प्रजातियाँ पतले तने वाली (ब्यास लगभग 1 सेमी0–1.5 सेमी0जैसे Calamus palustris, Calamus gracillis,Calamus wailong,Calamus caesius इत्यादि।) तथा कुछ मोटे तने वाली (ब्यास लगभग 2सेमी0–3सेमी0) होती है। बेंत की कुछ प्रजातियों का ब्यास 12 सेमी0 तक हो सकती है।जैसे Calamus viminalis, Calamus beccarii और Calamus nambariensis ब्यास 4 सेमी0 ,Calamus thwaitesii ब्यास 6 सेमी0 , Calamus manan ब्यास 10–12 सेमी0 इत्यादि।

1. **<u>बेंत का संचरण</u> (Propagation of the wood cane palm) –बेंत का संचरण सधारणतया बीज से नर्सरी तैयार करके अथवा भूमिगत तनों को जड़ सहित खोदकर उनका रोपण करके, दोनों विधियों से हो सकता है। बेंत के 2–3 वर्ष पुराने तनों में प्रत्येक वर्ष गुच्छे में फल लगते हैं। इन पके फलों से प्राप्त बीज को पालीथीन बैग में रोपण करके नर्सरी तैयार की जा सकती है। एक दो वर्ष पुरानी नर्सरी को दो– दो मीटर की दूरी पर रोपण करके 5–6 वर्षों मे घनी बेंत तैयार की जा सकती हैं।**

बेंत की नर्सरी

बेंत के अधो भू स्तारी निकलकर झुरमुट बना लेते हैं

बेंत के फल

बेंत द्वारा बेहाया (Ipomoea carnea) उन्मूलन – बेहाया जलीय पर्यावरण के लिये एक समस्या है। यह साधारणतया जल जमाव में उगता है। बेंत भी जलरोधी होता है तथा जल जमाव वाले क्षेत्रों में इसे उगाया जा सकता है । बेहाया प्रभावित क्षेत्रों में इसके नर्सरी का सघन रोपण करके बेहाया का उन्मूलन किया जा सकता है । 2–3 वर्ष में बेत 20–30 फीट के हो जाते हैं जिससे बेहाया नीचे होकर समाप्त हो जाता है । रोपड़ के 2–3 वर्षों में बेंत प्रतिवर्ष नये बीज भी देने लगते हैं जो छिटक कर पुनः नये पौधे बनाते हैं। प्रत्येक छवें वर्ष बेंत की कटाई करके, जहाँ कोई भी फसल नहीं उगती है, बिना किसी खर्च के प्रति एकड़ वर्तमान कीमतों पर लाखों रूपयों के बेंत प्राप्त किये जा सकते हैं, बशर्ते सरकारी या निजी सप्लायरों द्वारा बेंत के बीज या नर्सरी

उपलब्ध कराये जायें। जाड़े के दिनों में जैसे–जैसे पानी सूखता जाता है, गीली मिट्टी में बेतों के नर्सरी को लगाकर जुलाई में पानी भरने से पहले बेतों की पौध तैयार की जा सकती है। बेंत में बॉस की तरह पौधों की जड़ो से नये कल्ले (Rhizome branch) निकल कर नये पौधे बनाते हैं। कुछ ही वर्षों पश्चात सैकड़ों नये पौधों का एक झुरमुट (Clump) बन जाता हैं। बीज, जड़ से निकलने वाले कल्लों और कभी–कभी हरे और परिपक्व तनो के रोपण से भी नये पौधे तैयार किये जा सकते हैं। बेंत पेड़ों की छाया में भी उग सकने वाला पादप है। अधिक उत्पादन के लिए 100 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों या जल जमाव वाले जगहों पर, सड़क, नहर और रेलवे के किनारे उगे, बिना फल वाले वृक्षों ,जैसे अर्जुन, महोगनी, युकेलिप्टस, जंगल जलेबी (Mimosa dulsis), शीशम, साखू, सागवान, बबूल इत्यादि के सहारे भी बीज बोकर या पौधा लगाकर इसे उगाया जा सकता है। रेलवे के किनारे मिट्टी काटने के पश्चात बने गड्ढो में भी बेंत के बीज बोकर या नर्सरी का रोपण करके बेंत के झुरमुट (Clump) तैयार किये जा सकते हैं। यदि कुल क्षमता के 10–20 प्रतिशत हिस्से का उपयोग किया जाय तब भी 20–50 बिलियन डॉलर मूल्य के बेंत का उत्पादन पूरे देश से प्रति वर्ष किया जा सकता है।

बेंत धीरे–धीरे बेहाया का उन्मूलन कर देगा

बेंत की आर्थिकी :(Economics of the wood cane) – कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि बेंत भारतीय सामाजिक अर्थ व्यवस्था की रीढ़ बन सकता है। बेंत का उपयोग फर्नीचर से लेकर कई तरह के हैण्डिक्राफ्ट, तथा गृह निर्माण सामग्री के रूप में हो सकता है। उत्पादन अधिक होने पर सस्ते बेंत के बंगले बनाये जा सकते हैं।

लाल अंगूर ,गर्ड लाइक केवोटी , पैशन फल तथा पेड़ टमाटर

बेंत की उपलब्धता अधिक होने पर, लतादार फल और सब्जियाँ जैसे अंगूर(Vitis vinifera जापानी यमनासी अंगूर तथा कैलिफोर्निया लाल अंगूर को सम्मिलित करते हुए), कीवी(Acdinia deleciosa), गर्ड लाइक केयोटी (Sacheum edule सलाद के लिए), पैसन फल (Passiflora edulis), करैला (Memordica charentia), पेड़ टमाटर (Solenum betaceum), तोरई (Luffa cylindrica, Luffa esculenta),सेम (Dolicos lablab) इत्यादि उगाने के लिए तथा मुर्गी पालन एवं बतख पालन के लिए, जालीदार फ्रेम बनाने के उपयोग में लाया जा सकता है। बेंत के जालीदार फ्रेम पर मुर्गी पालन करने से मुर्गीयों का बीट झिरी से अलग गिर जायेगा। इससे मुर्गीयों को साफ–सुथरा रखने में सहूलियत होगी तथा फर्श गीला होने की समस्या नहीं रहेगी। बेंत का उपयोग स्कूल कालेज के फर्नीचर बनाने तक में हो सकता है। वर्तमान में 20 फीट लम्बे एक बेंत की कीमत, मोटाई के आधार पर 50रू0 से लेकर 500रू0 तक की हो सकती है। चूँकि बेंत छाया में भी उग सकने वाला पौधा है जिसे शीशम, नारियल, पाम, ताड़ (Borses flabalifer), जैटोब (Hymania caurbaril जल जमाव में उगने योग्य, फर्नीचर के लिये उपयुक्त लकड़ी), अर्जुन (Terminalia arzuna), के वृक्षों के सहारे भी उगाया जा सकता है। बेंत के अधिक उत्पादन के लिए खाली पड़ी भू–खण्ड, जल जमाव वाले क्षेत्र जो गर्मी में सूख जाते हैं, उपयुक्त हैं। क्योंकि बेंत एक उच्च जल सह्य तथा तेजी से पानी खींचने वाला पौधा है, इसके लिए जल जमाव वाले क्षेत्र अत्यधिक उपयुक्त हैं। यदि एक बेंत का पौधा औसत 0•5 वर्ग मीटर स्थान घेरता हो तो प्रति एकड़ (8000 बेंत के पौधे), प्रति 6–7 वर्ष में औसतन 10–15 लाख रूपये तक के बेंत प्राप्त हो सकते हैं। बेंत के अधिक उत्पादन से लोगों में फर्नीचर, बेंत के बंगलों तथा बेंत के अन्य उत्पादों का उपयोग कई गुना बढ़ जायेगा जिससे आम आदमी के जीवन स्तर में सुधार होगा।

बेंत के फर्नीचर एवं हैण्डिक्राफ्ट

बेंत की पारिस्थितिकी (Ecology of the wood cane palm) बेंत के काँटेदार झुरमुट कई प्रकार के पशु पक्षियों के लिए सुरक्षित आवास उपलब्ध कराते हैं। इसमें बहुत सी पक्षियाँ अपने घोंसले बनाती हैं। बेंत की लकड़ी कार्बन सिंक की भाँति व्यवहार करती है। इसमे काफी मात्रा मे कार्बन, प्रकाश संश्लेषण में जमा होता है। यदि पूरे संसार के उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु के क्षेत्रों में जल जमाव वाले खाली बंजर जमीन पर उपरोक्त विधियों से खेती प्रारम्भ हो जाय तो ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निबटने में काफी मदद मिलेगी।

रोजगार के अवसर (Scope of the employment) बेंत के उत्पादन से लेकर विपणन तक, हर स्तर पर रोजगार उपलब्ध होता है। बेंत की कटाई, छिलाई, पालिशिंग से लेकर फर्नीचरों (पलंग, चारपायी, मेज, कुर्सी, स्टूल, किताबें एवं बर्तन रखने के रैक, आलमारी) विभिन्न हैण्डिक्राफ्ट, टोकरी, छाता की छड़ी , टहलने की छड़ी इत्यादि के निर्माण मे रोजगार के काफी अवसर हैं। बेंत का उत्पादन बढ़ने पर यह कुटीर उद्योग का रुप ले सकता है।

यदि देश में बड़े पैमाने पर बेंत का उत्पादन एवं फर्नीचरों का निर्माण होने लगे तो, इनका निर्यात करके प्रतिवर्ष लगभग 30 बिलियन डालर तक विदेशी मुद्रा अर्जित किया जा सकता है। 90–100 सेमी0 से अधिक बारिश वाले क्षेत्रों में बेंत की नर्सरी किसानों को उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।

From –Anil Kumar Chauhan

Village- Fulwaria, Morwan

Post – Ramkola District –Kushinagar, U.P.

Pin -274305 Mob-9621056791